

सुभाष चन्द्र बोस

547

ASMA ARCHIVES



[illegible]

॥ कवाक ॥ ॥ शाया जगिरुय ॥ नमस्तु न मनसिद्धिरुवमि ॥ ७ ॥ रुनीययुह ॥ यु
 ॥ नमस्तु नमस्तु ॥ वायुयुय ॥ आया ॥ या ला रुवा का कथयमि ॥ दक्षिण ॥ ववागमन ॥ ३ ॥
 ॥ नमस्तु ॥ ॥ वायुयुय ॥ मि या गमन ॥ व ॥ वायुयुय ॥ मा मस्तु न रुवमि ॥
 ॥ नमस्तु ॥ ॥ वायुयुय ॥ या वि ॥ य वा का कथयमि ॥ व ॥ रुवा ॥ वा रुय
 ॥ नमस्तु ॥ ॥ वायुयुय ॥ युव ॥ वा व ॥ रुवा का कथयमि ॥ आया ॥
 ॥ नमस्तु ॥ ॥ वायुयुय ॥ नमस्तु ॥ दय ॥ य ॥ रुवा ॥ वा का कथयमि ॥

७
वा नरुद शगमन ॥
कथयमि ॥ अ न या
कवे निशरु वदि नि ॥
माय ॥ ७ ॥

०३
रुपु वृथा गमन ॥ ०० शा न्या रुद्र शीरुन ॥ वृक्ष सु नला
पक्षा व वं वि का मा द नानि रु व कि ००
वशा रु न रु वि ना ॥ ०० कि वा य स य नी का स

६३ नमः श्रु या य ॥ कं य ल क ण ह्वा ग य ॥ शिव त्व क न ल की ला रु ॥ क व द्वा स त्व क न श्री ला
रु ॥ ख व द्वा स त्व क न की न क व ॥
न रु ॥ न क मि त्व क न गुरु ॥ क्ता
न रु ॥ ग न ल व द्वा न श्री स गृ
रु ल क न व न रु नि ॥ रु व द्वा
ग ॥ न क ड ड व न व न ला रु ॥

रु व मि त्व क न व न ला रु ॥ ख व मि त्व क न क
स त्व क न वृ ला न रु गृ ह्वा म त्व क न मि रु
रु ॥ क व वा रु त्व क न ख रु मि दि ॥ ख व वा
त्व क न की न क व ॥ ख व ड ड त्व क न यि मा मा
रु ॥ रु त्व क न रु मि ला रु ॥ वृ ला न रु त्व क न

3

लाविनं कलं लवकन विवाद ॥ खवलाविनं कलं लवकन शक्र सवा विवा ॥
 कन दार्काभिं स वा विवाद ॥ कव कीं कलं लवकन श्रीलारु ख
 मिलारु ॥ नक्र कं कलं लवकन शक्र यसाद ॥ ॐ लवकन रि
 गदायु ॥ कव अ लुलवकन अरु ॥ खव अ लुलवकन अरु ॥
 ॥ कुरुय ॥ क दखलवकन शक्र नाश ॥ खव खलवकन अ
 युलवकन विदशगमन ॥ खव युलवकन विवाद ॥ नक्र युलवक

न आयशय ॥ कवन लिलवकन शं सनि मिनि नदाय हाथा ॥ खवन लिलवकन अयमान न
 कन लिलवकन अम व दान कमर ॥ कव गुं लिलवकन कयलारु ॥ खव गुं लिलव
 न यं निलय ॥ नक्र गुं लिलवकन वधन मरण ॥ कव या लिलवकन लिय समरण ॥
 नव वां लिलवकन वलान क मृत्क ॥ कव यान लिलवकन आयशय ॥ कव का लिलवकन
 युल न दामरण ॥ खव का लिलवकन श्री साग ॥ का म लिलवकन यं दस्य यु ॥ द थो ल
 वकन निवरुय ॥ अनाम लिलवकन शाक ॥ या लिलवकन यं दकाठयु ॥ का म लिलवकन वि

॥ यं वृत्तिसहस्रं म कृद्वृत्तिसहस्रं विरुनाशय ॥ यं दासहस्रं म गुरुकाश
 शय ॥ वृत्तिसहस्रं म गुरुकाश ॥ ॐ निःशंकाल काकयणीकास भाषु ॥ ७ ॥
 हस्वानपदिक् ॥ वृत्तिसहस्रं म कृद्वृत्तिसहस्रं विरुनाशय ॥ यं दासहस्रं म गुरुकाश
 निगमननिःशंक ॥ न नदास क
 यिववाव ॥ धवद ॥ वृत्तिसहस्रं म कृद्वृत्तिसहस्रं विरुनाशय ॥ यं दासहस्रं म गुरुकाश
 हास्वान न नाशय ॥ कृद्वृत्तिसहस्रं म कृद्वृत्तिसहस्रं विरुनाशय ॥ यं दासहस्रं म गुरुकाश

नशयव ॥ धं सलयास्यं नम गायया वागदाय ॥ वांदाथं थायाथं वाहलं शिक्काया
 वागदाय ॥ धं सलयास्यं नम गायया वागदाय ॥ वांदाथं थायाथं वाहलं शिक्काया
 खालनखाल थास्यं नम गायया वागदाय ॥ वांदाथं थायाथं वाहलं शिक्काया
 लारु ॥ धं सलयास्यं नम गायया वागदाय ॥ वांदाथं थायाथं वाहलं शिक्काया
 सहस्रं म कृद्वृत्तिसहस्रं विरुनाशय ॥ यं दासहस्रं म गुरुकाश
 प्रथमप्रथम सवाहलं मनसिद्धिशयव ॥ थं वृत्तिसहस्रं म गुरुकाशयव ॥

श्रुतासकालसं यदुक्तं यदुक्तं ॥ थाकुलिसकालसं काशसिद्धिदुक्तं ॥ थाटासकालसं २
 गाय ॥ यंकुलिसकालसं काश
 यु ॥ वंकुलिसकालसं थायवा
 भाठिसं नं उद्वं गुरुं ॥ हा
 धामरुं ॥ शुद्धिदुक्तं शुद्धि
 नाश्वयां मथ ॥ ६ नकुसं सथाथायवसं कुदशनं मथं ॥ नावमिवाधं नं नं

वंदुदशनं नकुदशनं ॥ धमभासुं नं नं कुशलवाशदाय ॥ श्रीनं श्रीवाधं नं शुद्धिदुक्तं ॥
 नलीकालनवसां सिद्धिवाशदाय ॥ याममथासं वंकुलिभासुं कालसनां
 नलीकालकालनलीनां सिद्धि
 ननलारुद्धायुव ॥ नकुसं नकुसं
 मथयां लोकमं वच ॥ कानिमुदुक्ति
 माहं वायवाधिनं सयुक्तं ॥ उक्तं वंकुलकालं ॥ श्रीशानं शुद्धिदुक्तं ॥ शुद्धिदुक्तं

८ कर्वं मृत्पुत्रात्मादिह मरुद्वयं ॥ किंकलकृष्ण ॥ २ ॥ लसिंदादावया ॥ अंगुष्ठवनलासा
 य रुक्मीविद्युनासनी । मध्यामा वनलासाय वागभाकम् अनामिका ॥ कनिष्ठा
 सव्यशायानि लकृष्णं नखद्वयं का ॥ ७ ॥ शृगालयनीका ॥ या का कालशृङ्गा
 रुभाय ॥ खवलाविनं काललीना खवर्तं नर्वलीना कायसिद्धि ॥ रुवलाविनं
 कालसनी कर्वर्तं नर्वनसनी स यदाय ॥ लिवनं काललीवर्तं मृत्पुत्रं य ॥
 रुवर्तं नकालस धीनं नवमे मठवधानी ॥ ३ ॥ शुभ ॥

९

नभावावयवमथ ॥ स्वप्नाभ्यायं प्रवक्ष्यामि युतूणां साधिनं युवा । अर्थाणां युक्तमानानां संक	यामं चतुर्थेयकमासथाऽविद्यश्च न संश
याननुविम्वारु ॥ स्वप्नरुप्रथम	विमुश्च न ॥ स्वप्नरिधक रूतका के न शुक्रयुध
य । अत्र ॥ गमवलायां आरुन	वा । यासादवृक्तवठरु वृमवानराणां आथा
मेधाय गोमाधदधिवसुमदमी	आथाहनं लावृमकुके शणां याशादलेला
रुनं वखलुदशनेमेवशम् ॥	गवनस्य कीना । दृष्टानूसाधं बुदिकवृकसे स्वप्नयुगमा गमनं वशम् ॥ यमयश

किंति ।

मिसयामनाज्ञानं कुकेरं रुयं । सुवर्णविरुवागावः कुदुमनस्य वद्वन ॥ शुक्रवसुद्विज्ञान	सिद्धिमवाप्तामिवाद्गणावचनं यथा ॥ चीत्वा
दृष्टागावशुक्रावृथा रुमी । स्वप्न	निव । अविहृथाविवृद्धं मंशागं विदुर्लल
ममदस्वप्नामं सनिनयलला	ध्वकभवव । स्वप्नललाविवृद्धं सनशुशम
रुन ॥ ध्रुवकुमुथादाला चामव	भकाकीथादिवारुकि । रुद्रमुदिवृष्टोत्पथ्य
मिगकुनि ॥ युधिर्मरुलिर्नवृक्त	नस्य श्रीः सर्वकासखी ॥ अममानिनुमां सानि मांसां नाथेवरुक्त ॥ अभयारुक्त

७० वेव पायसं वा वनं लं रुत ॥ निगठ वधन यस्तु वा दृष्ट्या न वा दूनः ॥ यथा वा जायत न
 स्या य निष्ठा वापि निदिष्टा न ॥
 निष्ठां यस्तु यस्तु यस्तु न विद्याय
 न वः ॥ न वः ॥ अयिदा स कुल
 सथा ॥ दशमानस्तु दशमं
 ॥ ॥ अथ माय वध वा कन्या ॥ अथ माल्या नूतनानां ॥ समालिं लो कियः कश्चि रुस्यता

यस्य

ग्यं मह रुव रुत ॥ अथ यी रुत माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि वस्तुनि
 ॥ अथ यी रुत माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि वस्तुनि
 न मा ॥ मह रुव रुत माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि
 मिय ॥ न मा ॥ अथ यी रुत माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि
 माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि वस्तुनि
 ॥ सय वध वन रुत माल्यानि वस्तुनि शास्त्रानि वस्तुनि वस्तुनि

नवाधियः॥ अथ विवृण्वन् यस्तु सताशां पादयान्नवः॥ कुमावकयसूत्रानुदश
 नगिवमाश्रुयारु॥ ऊं कुमाग
 ॥ पुरुषो धातुमवायनाग
 ॥ समुद्रमवर्णं देव नदीना
 दाहं भवव। वक्रवस्तुनः॥ ऊं
 धनानि श्रीधर्मरुद्रिवा रुवर्। विद्यागमस्तु धार्थ्य दृष्टु र्वगम्य वदं॥ ॥

नानां शंखयद्वा नां दशनेन युग्माश्रयः॥ जानुश्यां ग्रहणं धृष्टं वा कलद्वयमादिहोक्त॥
 कीर्तिरुल्लिख्यं कर्तुं मेकाकी
 श्यवद्वेन॥ यासादं सवर्णा रुद्र
 धृष्टं कस्यानिदिहोक्त॥ आसन
 नायि विवृण्वन् कस्यो श्रीः सवर्ः
 वस्तुथा। संपूर्णं शाविर्न दृष्टु श्रियं यवामवाश्रुयारु॥ दीर्घं धृष्टं रुल्लिख्य

यडां कुरुधरुनृथा। नानि आलरुत्सर्प यच्चिन्न यमिन्न कुर्यं॥ वठवा रुकुटीका र्थी
 लदायः पमिव धामि। मुकुला
 १२ मादीनि मासानि स्वप्ना भूयसु
 वयां यथा॥ यादो यैः शर्म ला
 मा लरु रुगि वरु रुका॥ सया
 रुमा पुलिका वा शा नग यथा धिवा रुवरु॥ यस्य स्थित न सथा ॥ दस्य रुद द्धि ॥

रुकु। लरु रुग रुम रुसाणि घूर्णु रुद श भदिन॥ वृथि वं धि वमि स्वप्न य मुवा म्वा यि
 वरु यदि। वा द्धु रु सुल रुम वि
 स्वप्न वरु म्वा यदि यथी नि। वाः
 यरु रु रुग रुग म्वा यी या ल्वा रु रुदः
 रुव रु रु॥ रुी व रु रु निली यी
 मरु रु रु रु व रुी रु न रु र्ग यः॥ मरु र्ग यि वमि यः स्वप्न रुग म्वा गम न रु रुः। मा

ॐ

७३

नवं युवयुवतीयाः कल्याणं ननु समादि ॥ गुरु ननु कुरुमावाधु च द्यादित्या वयं यथानि
 १॥ गंगा ॥ मुखा नवा गारु मरुती
 कथयिवा रुधु ॥ दयने के विव
 गन्धाङ्गीना ॥ पुष्पा मृग रुद्रा ॥
 ॥ नरु सु प्रोः मरुतीयाका म
 कथा दयानिना ॥ काय नरु यन की खड्ग
 दशनं न यशस्य न ॥ काव पुर्व सा वस रु

न३

सर्वेषु यथा विधिः ॥ नव रं विरु मंद दृष्टा स्वधृक्लीशमवाधु या ॥ धृमाय मानशाला नांद
 शाय रु वणा निव ॥ दृष्टा इः स्व म
 यथा ना नाग न मथा यिवा ॥ रुग्णा
 म्वा कर्द म्वा यि निरुध्वा यि ॥ स
 निमानव ॥ रुग्ण धृक् यमा काना
 नास मयि सर्वेथा ॥ शाल्मलीका विदा व म्वा वरु पुष्पा मथा यिवा ॥ वरु माल्या मृग व

78

श विनाशमभिगच्छति ॥ खवा सुमहियेयुक्तं वधमावृद्धदक्षिण ॥ स्वधदृष्टाविवृद्धन	नाना यज्ञानां गुरुणा कवकनूननधननून
विनाशवशगच्छति ॥ मयूषि	कृपादिदशननथव मरुतयसनमाप्रयाग
मृगं रुम्भे शुक्लनद्यादिदशनन ॥	गमाप्रयाग ॥ धनः सरुयिवदशय स्वधेवा
मलारुग्नीथयीभावात्तवृद्धक्री	श जीवर्ममूयेनिकर्व ॥ लाक्षावक्रामिवध
कृष्णमकवः शुद्धा रं दनमासा	यमलीकायकल्याण ॥ वक्रमगन
वा वक्रामात्मनि	
॥ सुवक्रादीमानि	

लिङ्गाङ्गावक्रवास्यासयुवव ॥ वक्रयाकनयाक्रियन वक्रयज्ञनलिङ्गानि ॥ कृष्णकण्ठ	सुधशात्मलिमासुय मियननामसंगय ॥
किनीयस्यादावृणाद्विजायन ॥	प्रिमनविषय ॥ दृष्टानयस्यास्वधानु मय्यक्री
लग्नस्याज्ञानमायस्या कृकभाः	स्वधवाञ्छालमरुसयिवदशवधसंनसयुभा
गमवाप्रयाग ॥ अरुवद्विध	धनगलीयसु स्वधममममरुगि ॥ मयाया
हननामिकरुविवावणा ॥ नित्य	
वलिर्नार्गयमलाकंसगच्छति ॥ गायकवादमस्वध धनवृद्धागलधनध आमनन	

स्याजानीयारु मृत्पुत्रव न संशयः॥ स नू चामययुयवा स्वध्रुवाद यमन वधुदेनीवाः
 यियः स्वध्रुव वधो न जीवति॥ यस्या ल माई जाय न ल मा गुल्मा रुष्ठा दयः
 १५ वायसावानिलीय न स जीवति
 यस्या म न व ४। यिशा वय मवाः
 याशा कष्टुका गुल्मा रिकटानु
 शानयथायावा वाल्मीकि विनिरुस्मानि य न कृ न व ३ नियम म व ६ शिपिगच्छति॥

कलुषमु सिद्धि वा कृपवान समारुत मरुत सारुत यमु स जीवति मियमन व ४। श्रु
 याद गला रुक् य कृ न न वि व न
 अरु जी य मु न ल न व श ना वि
 निदिष्टा ॥ अरि द व नै न्रियः
 वा रु व डा रु कु लो रु य ॥ उ दान
 निमोर्ल मी कृ प्रवा र म स्य निदिष्टा ॥ स्वधा द्यु कृ न व थ भेका की था धि वा रु नि ॥

५ सुविबुधोक्त यवा सक्तस्य निदिष्टा ॥ वक्रमाल्या म्रवयवा वक्रगंधानुल यना ॥ ३ य
 शाहय भनारी सा रा म्मी मस्य य
 १३ थाय क्रु ॥ कृष्ण नारी कय गृष्म
 मृ ह म् यून न ८ ॥ य ह रं लः
 कर्त मस्य यमानं य व व स्य वा
 मृ कृष्ण ॥ सिगा वक्रा वा स साहा स
 शिमा ॥ वक्रमाल्या म्रवयवा दक्षिणा दिशि
 वल मस्य निदिष्टा ॥ याद याद न विष्टस्य ह
 स मय म् स्वधना गी वि निदिष्टा ॥ गरी वय
 श्री ह स्य क्रु म् यः स्वधन या म्मा दिशि ययान क ॥
 सिर्ग ॥ न य म् दक्षिणा स्य व म्मा ह य म

श्रियं शिष्य कय व क्रि मे ॥ सार्द्धं मधु मेला दिद्या न क ॥ न र्ह मं य क्रु दि म् स्य द र्शनं न युग स्य म ॥
 य क र्त्त य व ना दि स्या य द्ध रं व यः
 मय म्मा यूय किं शु क वाल्मी कः
 क ला हा वा यि वि य रु थ ॥ वि दा
 सा ह रं स्य वृ य क मा सि स्य
 मा यू वं ॥ वक्रा गि ना नि जी ष्ठा नि
 वा क्रु य ॥ का का शी लं किं क क णी श्वाने व दं स्य
 या वि रु डा दि श ह ण ॥ ने ल क य्या स यि य्या
 व क रं स्य वं व क्रु व म् स्य वा र ण ॥ १ ॥ थो कः
 रु द्ध ण ॥ वि क्रु मि श्र म् य म्मा दि द णु या ग क
 न क व म्मा दि नि निर्म ॥ र व थ म्मा ह य म्मा र म्मा ग म्मा

दशविंशतिः। नमः पूजायुक्तं यथा सुखाय विद्यया ॥ दशयस्य विंशतिश्च स्वप्नान्नं यत्नं
निवा। अर्थनाशा। रुक्मस्य मृत्क
१० निरुमन्यथा। दधिलाला। कर्वाः
कृष्णयशः। सुदधिरुक्म। ॥ स्वप्न
विमवाध्वा। निश्वायिगश्च। मथा। सुव
रुथम् ॥ ॐ सुदधे नमः स्कारं। अथत्मा र्कं। रुयं। शिर्वं। अथ द्विश्वा विवधार्कं। या य इः स्वप्न

नाशिनी॥ एवं यदीकमाणा यः कृत्वा तन्मोनिश्चिन्तयतीति द्वयेशर्गं सायं शुभं दव नयुक्त
 थामादिषु स्वधर्मं रविपुत्रकेशु
 १८ न॥ सर्वलाकहिना दवीं नुदाणी
 न्यमश्न ॥ मिलला मश्न कृत्वा न
 मृथा दथयथा ॥ इः स्वधर्मा रुवन्न
 वा द्वाणा न निवदथे ॥ सन्ध्या धामयाणा क्री
 निमर्गं स्वधर्मा धायः समाप्ता ॥ शुभ ॥

कथं रुव द्वाणा मथविष्णुमा कुमार्त्तं नवसंयुक्ता
 पायनाशिनी ॥ नीर्थो धर्मं न भवेत्तु धर्मकथा
 वा द्वाणा नाश्न मर्त्ये ॥ इः स्वधर्मं न स्थानं न मः
 सव रुस्य निवदथयथा ॥ कल्पमृत्युयर्गं निर्यस
 लक्ष्मी नाहिना का मया ॥ १० ॥ इः निवदस्य

१७

२३ नमः शूराय ॥ नृकाकनृणां दिनमासनिधिरुवङ्गभवांशुषाप्रवक्ष्यामि पूर्वकर्म
वियाकिर्न ॥ अभनना ॥ रिमल्लेव
संजायननवः ॥ १ ॥ धर्मी गीमधु
व वेसाश्वजायननवः ॥ २ ॥ अकि
यानशकाव अष्टकुजायननवः
रः ॥ अकिनाकीवनाद्युष्ट आषाढजायननवः ॥ ३ ॥ वेङ्गुल्लुवूयवोलेव कायावर्मोयवि

प्रथमः ॥ धर्मोह्मायकिदामाद्युष्टावजायननवः ॥ ४ ॥ गामुल्लुगुरुगालाकीदानधानन
यध्विनां जायनथाननानूनी मा
पूष्पावनाकिः ॥ सत्यवाशुरुह्य
महाह्वानी दवपूष्पावमध्वः ॥
महाह्वानी महाभागी धर्मोह्मा
रुवः ॥ ५ ॥ शुविदामा महासत्य मारुपिरुध्यावकः ॥ आत्मार्गानथायागी धीधसंजा

यमनवः॥१॥महाभुम्भाभरुनीकायाद्याङ्गवनागमःशययलासूत्रह्यागीवमासिमाद्य
 यजायनः॥१॥कुलीनधयलाका
 २० एतुजायनवः॥१२॥००मिमा
 बानसुविवरुणःकुदुस्यारुव
 राजाकावसुदीनमवसावःआ
 मजागरुकीयधिवतदुयाविशवीनवानाखाखाणिवेवदयस्यकवाकिसुजनमह॥३॥

वहुथाचिनवाकानःसर्वेजनप्रियगुरुसर्वेषांवेववसुनामुयाजसर्वेदानथा॥१॥येवे
 याचिनवाकाभामारुपिरुगुया
 कुदाशर्ववृत्तानांनवायष्टीव
 मा॥८॥सर्वेषांथायकादथासि
 जनस्यइलरुः॥१॥सावावणा
 वाकाभाससुवधामिकसूची॥८॥कर्मधूत्रसुथायागीनवयाथिरुवरुनवशसर्वेला

कय गावासु संजाभादशमीनिधो ॥२॥ ॥१०॥ नकादश्यां नथाजाभा अकिमीव यरा कमः ॥१॥
 मिशोयरावी द्वादश्यां थारुवदाऊ
 २१ वरुसदा ॥१३॥ चउदश्यां निथाजान
 स्यां म रीष्टलस्य नरुली सुखीः
 निधो जागस्यरुली ॥ ० ॥ अथैव
 हाकामी अग्निजायमनवः ॥१॥ आथागीवसुखीरागी कृमाक्षामकिमांरुथा सत्य

वांसु दृष्टेव रुवण्यां जायमनवः ॥२॥ कृमद्वायायकमोय रुवायां यविपीशुर्न सुकमो
 कृवर्नचानु कृलिकजायमनवः
 दः ॥ गूथामसर्वाद्ययष्टेव यनाद्या
 गीवदावृणाय वथायात्यरुकावी
 नयायवरुसदा आदोयां नथाजा
 रागी त्यागीवयतिवल्लरुः ॥ वरुमिषयकायादि पुनर्वेशो जायमनवः ॥ १ ॥ रागावर्भा

२३

वनवाँवसूखीसदा।पादभववहुर्थेव मृलायाँनव संरुव॥१८॥००॥मिहुयथावीव ससौरा
 ग्यनभग्वरः।दूवाह्यागीनयामानी
 रुमिहुसूखीसदा।कृन रुकृनसा
 गोप्रवण।सूकदासममन्त्रिकः।
 गीमप्रियाधनिष्ठाव सूवमुहम
 रुवह॥२३॥कृयणसूर्थवान्सायि परदावासुशवका।वावृणार्कनथाजाना विस्वासगम

नीरुवह॥२९॥पूर्वेसादयदमरु मनुष्याय इयजायन।वक्रासूवप्रजायोवे।वहुविशानिव
 स्मिकः॥२९॥सलोयावमोवा।
 रुवासादयदनवः॥२८॥ससंपू
 योजाना।वनवन्नावलकृनः॥२९॥
 ह्यविजानानथावेव कृयणोका
 कृणः॥११२॥मानवामंगलजाना जायनवहुवृयवान्।३।वहुवावनवाँवैव जायनमा

24

२५

२५ नभावागीश्वराय ॥ नन्नमामिदं रंक्षा नि ववाद्यानुसगाववं ॥ १ ॥ नूनलयत्यविद्याया विद्या
 मन्मीलयत्यपि ॥ १ ॥ दयद्विती
 त्वं पादथापानुयः नथाः ॥ २ ॥
 पस्वीसंयमीथागी वन्मीसा व
 वासिनस्त्रिदुः कृकान्नागमसि
 वीष्टधी नृव्वराभदिनीमही ॥ यवावसून्यवावाही ॥ कमाविश्वसुवावनिः ॥ ३ ॥ वसूभायवपिः
 यमूरुयं यमलं युगलं युगं ॥ युग्मं द्वंद्वं यमं द्वि
 सधिर्येकिमुनिभाक् स्त्रायसः ॥ ३ ॥ सिक्कवमी ॥ क
 श्वाहवः ॥ ३ ॥ दीक्षितं भाक् शिवाव नमः
 दानं गुणः शास्त्रमनः यव ॥ ४ ॥ नृमिः वृथि
 कमाविश्वसुवावनिः ॥ ३ ॥ वसूभायवपिः

कृष्णी स्त्रायविशीक्षि निश्चक्रः ॥ कुम्भिनीलार्वावावी ॥ रुगमीलोर्वसुमकी ॥ ५ ॥ नृत्यशाययवः
 लील नृत्यशाययकिनेयः ॥ नृ
 वीरुदवलंष्ट्री यव्वेनः सानु
 विककुम्भमवृत् ॥ ६ ॥ प्रसूयां
 नृश्च नृद्वानयिगिनिः स्मृकः ॥ ७ ॥
 कुम्भणीश्वराविरुवी शाना मर्त्यवृत् ॥ ८ ॥ नृणीगिना ॥ १० ॥ अनाकल्लुवृः शास्त्री विटयीरुलि

२३

मानगः। दुर्माः। क्रियः। रुलयादी। पादथा। लावनस्यमिशः॥ १॥ मल्यशाययथा। रुथा। रुविर्व
लीमुखः। कपिः। वानरः। सुवग
रुनकक मयथा। काननं वनं
॥ यूलिन्दः। वथा। दस्युः। निष्ठाः
नीवरः। सुमः॥ १४॥ वाद्यविर्क
नं। कुशीनीरं। भायं। जीवनमूर्तिः॥ १५॥ मल्यशाययथा। मत्स्य। सुल्यशाययथा। घनः। म

ल्यशायथा। रुवंयमं। मल्यशाययथिवं वृषिः॥ १६॥ पृथुशामा। मठ्ठि। ला। यादावेसावि। ला। मयः। ४
विमावी। शरुथार्मीनः। या। पी। ना। नि
रुं वला। रुकः। यश। था। मि। रुथान
कणवृवि। विंशु। रुल्यकिवमृदः
॥ यविमलकदं। मं। पं। क। सु। रु। न्नां। म।
रुहं॥ २०॥ खवदधुं। का। कनदं। पु। धु। री। की। म। ला। ल्यलं। २०॥ न्दीववमवविन्दं। शरु। यरुं। ययु। वृ। री।

२१

॥२१॥ कछमीर्विसनीरूया वनमिर्वेल्लनीलना वल्लीनामानिथाश्रानि वाविधिद्वेषुभऽवूना ॥
॥२२॥ आरुस्त्रिनीधूनीर्मिधुःप्रः वन्नीनिम्रगायगाऽनदीनदादिवरुध्गगवित्ताः
माकर्वगिणी॥२३॥ कल्यमिध्वरुव ल्यादिःपावावावा मृकाहुवऽश्रुवावयाथाकूयाथा
वत्तमीनारिधाकरः॥२४॥ समु डावाविशाशिश्च सविद्वान्सागथाऽर्चुवऽसीभा
यकधुमीवश्च यार्वाथाऽवधि रुहः॥२५॥ रुक्मस्त्रवम्ऽकलाला वीश्रमिःक
लिकावलिऽयालावलाकटाकुशो विरुभाऽयकृद्वमः॥२६॥ मनूथा मानूथामहो मनू

आमानवानवऽनायूमानुधुवूथागाऽवा यवःस्यारुल्यमिर्नृयः॥२७॥ रुल्याऽधरुनकऽयलिः
यदाकिऽयदगाऽनुगऽरुठाऽनुः जीवानुववऽगऽश्रुजीवीचकिक्कवः॥२८॥ श्रीनारी
वनिकामुयाऽरामिनीललनावः धूऽश्रुनाकामिनीथाविद्वामासीमन्निनीकथा
॥२९॥ निरुम्विनावलावाथाकामु कीवामलावनाऽरामानुदवीवामा मून्धवीयू
वमीकथा॥३०॥ राशाजायाकनि ःकुल्या कलर्गगदिनीगृहंमदिल्लामानिनीय
लीकथादावाऽधुर्वधयः॥३१॥ वल्लराथया सीधुष्टा वमणादयिनायियाऽऽष्टावधुमदा

२८

कान्ता वल्लु प्रणयिनी कथा ॥ ३२ ॥ समीपमिव कासाक्षी यमि यत्ना कथयति । मनस्विनी रुवत्या
या विद्ययी नानि वृथा ॥ ३३ ॥ वं
रि साविका दूमी स्वे विणी सैरुली
लासिनी । यथा श्री दाविका दासी ।
मः प्रियः कामी व कामुकः वल्लरु
विशीरु न नीमा ना रुनकः सविना यिमा । दहाय घनः काथा ॥ ३४ ॥ वयो सैरु न न वयः ॥ ३५ ॥

भा २

कल वरं शवी वरः मूर्ति वस्मि न रुव सुमः । पुरुः मून वयस्य वरः ऊर्को रं वा त्म रु प्रजा ॥ ३६ ॥
उद्धरु सुनयः धामा दावका नंद
विडः ॥ ३७ ॥ वयस्याली सरुव वी
मं धामि रुयु रु सुद्धरु ॥ ४० ॥ सरु
रुः सला शी वयः सादथा । ववः
मी सु सानुजा । रु रुः स्व सान न न्दा स्या । त्मा उला नी प्रिया मि का ॥ ४२ ॥ वे शा वा मि व मि का । वि

३२

द्विद्वयत्वादिषट्पद्विषयः। जालुवा इह नः। गुरु इष्टाद्वयीखलाः। हिमः॥ ४३॥ दीधिमिर्त्तनं वृथां
 शुभं रुरुस्मिः। किरणः। कवः। यादा
 दीधिमिर्त्तनं। मिर्त्तनं। वामा। वग्निवृः
 रास्त्रो॥ ४३॥ गीगीविषुः। सुधाः
 यः। कान्तिमानोषधीधवः॥ ४६॥
 वादावकनीनर्कं। दासाः। मादया कवः॥ ४७॥ नवलिस्त्रय नारान्। वृषं। धृष्टाशमावविः।

निगःयनकाय मणि मोहं प्रोक्ष्य द्वाधियः॥४८॥ॐ नःसृष्टसुभा वस्तु मिमिवा विवि
 वावनःदिनं दिवा रुदिवशा वा
 धूःकुमुद विविधियःयमूनायम
 वलावारी रुथायय सुवज्रमः
 ॥३०॥खंविहायी विथङ्गामगग
 मथाऽथाथ ॥३१॥नञ्चवःखं ववस्तुनःयकीयकीयकशुचि । गङ्गनिःगङ्गनिर्विश्व यम

30

ॐ विष्णु वाऽन्यथा ॥ ३३ ॥ ऊर्ध्वलम्बिणिर्मानं यत्तं यशी वनस्थियः ॥ यादुवानसुथा वक्ष्या वाशा
 दिव्यवः ॥ ३४ ॥ सुभाऽदिकस्त
 नाकथं रुद्रासमिद्धा रुमः ॥ ३५
 चीनवर्हिः ॥ सुभा मा वक्षी वा खं
 मध्वयि ॥ रुद्रावसरु आक्षी
 वासवा रु विवा रु नः ॥ मध्वयि मध्वयि
 रुद्रावसरु आक्षी

हृम ध्वकोशिकः संकन्दभाथमद्युवान् युलामाविमो हृम खः॥३०॥ काष्ठाककुद्विगाशाश्च दह
 कन्यामथाह विरु मत्य शायधनया
 य वायुवोनाऽनिलामरुह समीप
 मामविश्याव वरुणाऽव नसुथा ॥
 मत्स्रस्वामिः शिखीवक्त्रिः पावकश्चा
 नूनयार् ॥३३॥ स्वाहायमिह माशश्च हलनादहनाऽनलः वेग्यानवः कृशान्धश्चोहि माष्ट्या

३५

विरावसुः॥६४॥ वृषाकपिः॥ गमीगर्भो रुद्रवाहकः॥ गानः॥ रुद्रादिमूनुः॥ सनानीः॥ सुन्दर्यगि
 खिवाहनः॥६५॥ कार्तिकेयविशा खद्युः॥ कुमारः॥ यन्मृश्वीगुहः॥ गकिमान्को॥ ३३॥ रुदी
 वः॥ गवः॥ गिवाः॥ सुकः॥६६॥ मरिचि माशकः॥ गमुः॥ गिवः॥ सुकः॥ मोहः॥ गवः॥ गुमृका
 धूर्तिः॥ गवः॥ यिनाकीप्रमथापिय ॥६७॥ रियुवावि विगालाका गिविः॥ नीललादि
 मः॥ रुद्रनुमी लीयः॥ विरिभः॥ रुद्र वरुधः॥६८॥ उग्रः॥ गृलीकयालीच गियिविः
 रूवाहनः॥ उमायमिर्विदूयाका विश्वरूपः॥ कयद्यपि॥६९॥ अमर्षुगिविजा गीवीरुवा

नीयार्त्तनीगिवा ॥ वृषीदाकायणीदुर्गो वाश्विकादिमवसूना॥१०॥ रागीरथीरियथगा जाह्नवीदि
 मवसूना ॥ मन्दाकिनीसुः॥ यथायधु नीमंगानदीश्वरा॥११॥ विधिवैवाविवामाद्रु दिना
 ॥ रुद्रधुमूखः॥ यद्वायथायथानि धुयिनामरुविविचिकी॥१२॥ दिव्यागर्भः॥ सुखा
 वः॥ प्रसायमिः॥ मरुप्रयारु ॥ वक्रात्म रुवननात्मा ॥ कसुत्युकादिनावदः॥१३॥ कृष्णदा
 भादवाविषु ॥ रुधुः॥ यूरुधालुमः॥ कशवधुदधीकशः॥ गाङ्गोनायायलोहविः॥१४॥
 कशीमधुर्वलिहोला दिव्याकशिपुसुथा ॥ रुद्रादिमूदनः॥ लोविः॥ यद्वा नाकाः॥ योहः॥१५॥

३२

लाविंदावासदवधलक्ष्मीलीलोमिनिदिवाः। मलयनिःलेलकृष्णादिभवधकधवसुधा॥१६॥ मलयुआ
मन्मथःकामःपूर्य्यकाविवननयकः।
मुखःशत्रवावाणी। माग्नेलावायणःक
काम्यककैवनुधायी। यमीकादधुर्क
॥१७॥ यूर्य्यसुमनसःरुद्रा ललानु
वः॥१८॥ स्वानुमाधिनिर्गचिरु वनाः॥१९॥ करणमार्गद्वयविसकाकुर्न। मावसुधाइवाममः॥२०॥

काययशायवहिना। मदनामकरवधकः॥११॥ गिली
॥१२॥ मूःकाधुक्वययै। नागार्वाभामरंशवः॥१३॥
वनुःशिलीमुखःशत्रुःभनीककादिःसहनीमिडः।
प्रसभाइभी। प्रसूनकसुमरुयं। मदाशुसुशवःस
वः॥२१॥ स्वानुमाधिनिर्गचिरु वनाः॥२२॥ करणमार्गद्वयविसकाकुर्न। मावसुधाइवाममः॥२३॥

भोव्रीकीवगुलोओलि। बमीरुद्रःशिलीमुखः। रुमरःषट्पदाहूथा। द्विबरुधमधुवमः॥२४॥ भो
द्यादियानुमालादि। कन्दय्यश्रीक
॥२५॥ धरुयमाकाककुशविहंग
वःसुमः॥२६॥ कीक्षयकाऽमिनि
खड्गनामावलीमिडः॥२७॥ अक्षा
नाशनाशैर्यदिधु। ववुधिनी॥२८॥

ववनुः। रुमिबसुयवंगसुं। यूर्य्याशुसुःसामम
द्वेऊयन्यायि। मरुत्यदनामकादिः॥२९॥ भूविद्युक
सुंशःकृपाणःकववालकः। मरवाविमोपुलायः
हिणीवलानीकी। वाहिनीसाधनवमूः। धरुनीधु
॥३०॥ रुदनीसमवयुद्धं। सयुगकलहं। वणी। स्यामीसमयरा

३३

यात्रि संयदाहमोहाहव ॥ ८० ॥ गङ्गा मरुङ्गाहस्री वाव ॥ ८१ ॥ नकयः कवी ॥ दनी सुभ्रव माः क
 श्री द्विवदरुमरुङ्गा माः ॥ ८८ ॥ सुपु
 सिन्धुवसुयनाङ्गा नानिवाद्यः
 रुविः सिन्धुयुवः शाहूलः ॥ ९१ ॥
 व्युष्टिः थाडीवसूकरः ॥ ९२ ॥ मयः
 सावभथा मधुलः ॥ ९३ ॥ पुत्रागमिः ॥ ९४ ॥ काथागमः ॥ ९५ ॥ शाहूलः ॥ ९६ ॥ कुक्थावात्रिङ्गागवः ॥ ९७ ॥ २ ॥ ह म

याष्टायदंस्वर्णं कनकाहूनकाचैर्न ॥ सुवर्णं द्विवर्णं रुमोङ्गा मय्यं वहा रुकः ॥ १०३ ॥ नयनीयं
 कलधौर्न कारुस्वर्णं शिलाहूनं ॥
 वसुवसुदर्थं स्वाधौनादविष्टं
 वेष्टवर्णं वाङ्गा रुमलवाशाद्यनि
 ॥ १०६ ॥ याष्टं कनयदनि ॥ १०७ ॥ ऊर्णाका
 रुदनं ॥ १०८ ॥ वङ्गीलयन मास्यं वदनि वदनं मुखं ॥ १०९ ॥ नर्णं शवर्णं ॥ ११० ॥ शर्वकधुं ॥ १११ ॥

३४

सिद्धः॥७८॥ दृगन्दिबद्धनेयनं दृष्टिं न संविलाचनं कटाक्षं ककवायां गं विरुमसुसुवेकर्म।
 ॥७९॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 मनीषमः॥१००॥ दादं पुष्टुशुभा
 सी रुमृगाखा कराहुलिः॥१०१॥
 नः यथावथावदः कृषीरुमिनिव
 ऊरुवचलनं ववर्णयादं कर्माऽकिं यदं विदुः॥१०२॥ गिथामूर्द्धाहमार्गं कं प्रावस्यादि वि

भीषिकं वाग्वथावचनं वाली सारथीगीः सवस्वमी॥१०४॥ सिद्धद्विधद्यनगद्गो कृषाऽथं विदिकं ग
 र्गः॥१०५॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 कर्मः॥१०६॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 कर्मः॥१०७॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 कर्मः॥१०८॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 कर्मः॥१०९॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव
 कर्मः॥११०॥ दनुवासाऽथवाऽथाष्टाव

३३

नृकाणां हिमाद्रिः कवृणादया ॥ १० ॥ मूर्षा विस्मया प्रह्ला मनीषा श्री सुधाया ॥ १० ॥ प्राह्ला
 भवाधी मानविद्वानरिबुधा विव
 स्मृता ॥ ११ ॥ पाविष्या ववसराः
 ऊमृथानृयकडुः ॥ १२ ॥ विष्टु रं
 नैलाका ऊगल सायन किर्तिनः ॥ १३ ॥
 उद्धाकः काश्या थावका लोकमाना रिक्ताः ॥ १४ ॥ सन्नामि मोहनीवीना मदावीनाऽथका

श्यायः नाथयथा वर्द्धमाना श्रीर्धर्मिणः साम्यकं ॥ १५ ॥ सर्वह्लादीकवाणाऽदे लवली यमोच
 कलृकु मीथेकव स्त्रीथेकश्च मीथे
 व ममृव मंशुकं ॥ १६ ॥ वसु शनू दिगा
 व वक्र कमुषी मृगना रिङ्गं ॥ १७ ॥ कर्षु
 समालीलाऽऊवा गश्च पुसावनं
 अक्रा ॥ १८ ॥ भखला वमणा कावरी हमयशाय मूयकः ॥ १९ ॥ विष्णु वृही मूर्ध मानमूयः

३३

मिवा हि नः ॥ १२० ॥ मदिरां मधु मेधयं जीव कादम्वरी मिवाः ॥ १२१ ॥ यमनां यावली मदी मधुवासां
सुसां विदुः ॥ १२२ ॥ शुष्णी वसकवः ॥ १२३ ॥ ययः ॥ लो ॥ ग ॥ लो ॥ रु मा ॥ य ॥ ग ॥ का व ॥ शि ॥ रु ॥ या
भव विविश सदयद मिः ॥ १२४ ॥ सयि ॥ हे ॥ य ॥ ग ॥ वी ॥ ना ॥ इ ॥ दु ॥ र्ग ॥ की ॥ वा ॥ मृ ॥ र्ग ॥ य ॥ य ॥ ॥ ६
दग्नि रुक् मथिर्ग कालभयं धि वरु ॥ १२५ ॥ प्राथो वथा दशानरु ॥ य ॥ लो ॥ यो ॥ व ॥ न
कं विदुः ॥ १२६ ॥ ॥ नृ ॥ था ॥ नृ ॥ वा ॥ य ॥ ॥ ॥ या ॥ दा ॥ म्ना ॥ य ॥ ॥ स ॥ नृ ॥ मि ॥ ॥ रु ॥ ली ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ डो ॥ धा ॥ व ॥ र्ग ॥ य ॥ स
नानः काय भव कथः ॥ मि ॥ मि ॥ ॥ म ॥ यु ॥ था ॥ व ॥ र्ग ॥ ॥ ॥ क ॥ की ॥ गि ॥ र्गी ॥ प्रा ॥ य ॥ हि ॥ क ॥ रु ॥ था ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ नी ॥ ल ॥ की

० ॥ कलायीव शिखली ॥ कथ नि मुहः ॥ वरदा वरली रुक्मी रुक्मवाहः ॥ सनाहनः ॥ १२९ ॥ रु वि
॥ मृ ॥ ग ॥ य ॥ रु ॥ नृ ॥ सु ॥ र्ग ॥ क ॥ ॥ ग ॥ र्ग ॥ वी ॥ क ॥ व ॥ ॥ य ॥ नृ ॥ ला ॥ ॥ ॥ हि ॥ वि ॥ य ॥ म ॥ था ॥ ल ॥ लि ॥ हा ॥ ना ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ म ॥ ॥
॥ १२१ ॥ ॥ ना ॥ ला ॥ व ॥ ली ॥ रु ॥ ली ॥ स ॥ य ॥ सु ॥ रु ॥ ॥ ग ॥ व ॥ नृ ॥ मा ॥ रु ॥ ॥ सु ॥ य ॥ लो ॥ ग ॥ व ॥ रु ॥ सा ॥ श्रु ॥ ग ॥ व ॥ ल्मा ॥ नृ ॥
ग ॥ रु ॥ नृ ॥ म ॥ व ॥ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ ॥ नृ ॥ रु ॥ मि ॥ रु ॥ म ॥ नृ ॥ पू ॥ ना ॥ ला ॥ व ॥ नृ ॥ म ॥ था ॥ वि ॥ य ॥ रु ॥ य ॥ ॥ ॥ र ॥ मि ॥ नि ॥ रु ॥ य ॥ ॥ रु ॥ वी
क ॥ व ॥ आ ॥ म ॥ ॥ रु ॥ क ॥ व ॥ र्ग ॥ वि ॥ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ य ॥ लो ॥ रा ॥ ग ॥ य ॥ व ॥ सु ॥ रु ॥ रु ॥ रा ॥ ग ॥ य ॥ य ॥ व ॥ स ॥ रु ॥ रु ॥ म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
म ॥ य ॥ य ॥ इ ॥ वि ॥ र्ग ॥ या ॥ या ॥ या ॥ य ॥ रु ॥ कि ॥ लि ॥ रु ॥ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ वृ ॥ रु ॥ नि ॥ क ॥ लि ॥ ली ॥ व ॥ ना ॥ इ ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ यी ॥ रु ॥ नि ॥ ॥

३१

सदनं सद्यः रुवनं निष्ठां वग्मा धर्मदिवं ॥ १३१ ॥ गहनं निकमना गावं निशान्नं निवृत्तं गृहं वस
 त्या वसथा वासी सुनं धामासाद
 लयं । श्वयं स्वार्थं व यविखा वयुः
 माली । गायत्रा कृतिः । आसादः सा
 यनं ममालं व मालं व सुखमास
 क ॥ १३२ ॥ उल्लाः सुधमः सुबुध सुलाकक्षा यमा विधा । विन्मन्त्रा विद्यमानध गुबुम्भान् वि
 सदे ॥ १३३ ॥ निकायं निलयं वस्त्रं शवणं विववा
 सादवदुहिमं ॥ १३४ ॥ आकावः यविधिः सालः
 धा हर्माव निमृदा मन्त्रवावण ॥ १३५ ॥ वा मा
 नं । समः सवधुः सकृत्किः सदृक्कः सदृशः सदृ
 यमा विधा । विन्मन्त्रा विद्यमानध गुबुम्भान् वि

जाननः ॥ १३६ ॥ सिद्धनादी किययोय मयमा नवृथा कथय । श्रुयदं निरुं शार्कं यदं वातिकं
 कर्ल ॥ १३७ ॥ कृद्गिरु नु मृत्युका
 मूरुः सन्नमि बुजः ॥ १३८ ॥ श्रुद्धा
 समुदयः सद्यः सद्यः समितिः
 लक्राकं । समीपा स्या समासनः
 ठ मवलन मननं व । जित्योरुलि रुवसीव लाकल मदला वल ॥ १४१ ॥ भव गो दयि मा
 गद्य मनीव निनेथर । वामः युगः समाह्लाधस
 निकाया निकथा निकवृत्त कदम्बकः । डाद्यः
 मुक्तिः ॥ १४२ ॥ निवयः प्रकवः यन्त्रिः यशूनां जा
 मरुधुः सन्निधि विदः ॥ १४३ ॥ अविद्वेषक निक
 लाकल मदला वल ॥ १४४ ॥ भव गो दयि मा

३८

नीलवसनः कशवाग्रः अर्जुनः रुद्रः ॥ १४२ ॥ गाथीव कार्मुकः
 सद्यसावी मधुमयाधुवः ॥ वृषास
 मृदः किरीटीव गदगदी धनंजय
 ऊचुर्कीव कथाः ॥ १४३ ॥ कोवशा वाजयन्ताश्वा
 यः ॥ १४४ ॥ कीवशा वाजयन्ताश्वा
 धूम मलियरुः ॥ १४५ ॥ कभाः न्यकारं किमिव धान्नं सन्नमसीतमः ॥ १४६ ॥ शिर्षं शिर्षं शिर्षं शिर्षं

थल्यवः ॥ १४७ ॥ मासहस्रमंगलं साद्वं साशा समूसमी ॥ १४८ ॥ सर्वदा समकं नित्यं ॥ १४९ ॥ दलं नित्यं
 सदा ॥ १५० ॥ मृदुमिह विनोथा ॥ १५१ ॥ वि
 महिमाना मधुदिका ॥ १५२ ॥ विथार्गमद
 यमालस्य वागः ॥ १५३ ॥ मरुः परं ॥ १५४ ॥
 ससृर्गं समवर्तु ॥ १५५ ॥ पादुवन्नीरुम
 वाः ॥ १५६ ॥ विमार्गनामगा गंगा ॥ १५७ ॥ धायालो मेधुला मृदुः ॥ १५८ ॥ कर्णदीपुः ॥ १५९ ॥ निष्कामः ॥ १६० ॥ कुशलानि युगाः

४०

मदः॥१५३॥कुशुःप्रदीपःप्रागल्भःकाविदधुविशावदःविदधुधुथावूलेश्चादुक्किक्रवः
 १०॥१५४॥कापिनागविकारुथा
 मुखेधुकादः॥१५५॥सदवा ना
 मःशालि चोदिसुसुकाविसुथा
 सुकःशोषीथागविमसुधागवी
 धुधुनाऽधमःशोवेकागाविकभुन सुकवःप्रमिथावकः॥१५६॥निशावथागूरुनथाः

विकःप्रलिधिवरःप्रसुथायलयायाणादशद्राहुगिलाभनः॥१५७॥कुरुकाकमथा लारुः
 शाककुरुनथत्यवसावीभानित्य
 लस्यर्ध विगर्दयुक्कलमनःवि
 अरुिथाशाद्राहाऽकिगकि
 ववेविणः॥१५८॥शीधुविसानयू
 वरुस्यवकिनलिकः॥१५९॥कीनाशःकृयलालुवाऽःखीदीनधुमदकःकिप्राधुमईवंगी

४१
 धृं सहसा मठि किं क॥ १०४॥ कृष्णं कृष्णं स्यादः किं प्रं वं हं व ग सुभालयु । या गं कृष्णः सिमाव
 धा मन्दिमालीनियन्त्रिमाः ॥ १०५॥
 कां न क म न क म न क म न नीयं म
 व स न र व । वा वृक्ष कृष्णं व वृ वि रं य
 ल य शाय दा वि व । अ व श्या यं नु
 म क रं वि द्वि मृगां का वा हि णी य निः । घृ न्ना गः स न्न र म्या कृ म्लि ल क रं वि ण य कः ॥ १०६॥

ललाटिका लला मायि पृष्ठं कृष्णं कथा कृ मः । अ ऊ र्ण क कृ लं ना गं ग कं पाटल मा वृ णः ॥ १०७॥ शा
 ली या वि वि वृ कृ रं कृ ला मी सा वि
 वः ॥ १०८॥ म थानु कं सह म्रा कृः स
 म्रा ह ला दि कि ॥ १०९॥ या थ ण मि
 वि कं भा वा सा व म नृ य सः ॥ ११०॥
 रं म नृ रं य दं रु म्नि रु म्ना ग ना य कं ॥ १११॥ दी द्ये पं थुं वि गालं च नृ द्ये च पृ थु लं पृ थुः ड ल्व

४२

धंदावृणं किमं ध्यानं नीवाय मुक्ता ॥ १८३ ॥ सीमकं किमिमेयायां मदश्चिद्विलम्बितं शोका
 दं शोकादं दृश्यं शोकादं सखा शोच
 मर्मं स्वरावं प्रवृत्तिः शीलं निम
 स्मादरीकं पुनर्मूर्च्छः ॥ १८४ ॥ वृथा लीकं
 वसनीकं कृच्छं गहनं मुद्वर्च
 ॥ १८५ ॥ शकलं विकलं खंडं शकलं शलवं विडं चर्मकां शकलं यचिवादं मुद्वर्च

हं नमः शिवाय ॥ लक्ष्मीं शृणु लिलिङ्गं यशस्वा मया कुलितं यमिदं नानां कनि
 यणी शूद्रकनस्यार्थं काश्चायथा
 वृथस्ववमुधा ॥ गच्छ वृद्धिं वा
 नृनिदाशं निद्रादिविधुष्यथा
 शाला मूत्रथा कनीया ॥ १८६ ॥ सिद्धं न
 आश्रय नशागादिषु मृत्पदाशं वशादि शाला मूत्रथा कनीया ॥ १८७ ॥ वृथ न सम्यक् लिनादिदा जि

३३

४४

विशामपि॥२०१॥प्रमाणानाममालिनि
कविकृष्णः॥२०२॥ब्रह्मर्षिसमू
मीश्वरसूत्रनदीयाज्ञातुथार्कः
दशादक्षाःपूतनयनिवनः३थः
यनिर्घोषसमाधु॥धुरं॥२॥

कानाकेऽश्वदयः॥शास्त्रवनः३थःनदंयन्त्रिने
यस्यवदनिनदद्याज्ञातुथावाचलमास्त्रागविव
वः॥अथभूनिधिगायिनीकुलनिधिधानाद्य
नवधियाः॥३॥समूह्याः॥४॥निवनः३
॥

त्याशक्तिवानं कथया मया धामः सर्वे वृथमस्य गृहीहि गीष्वा । श्रु कर्हि न कृन्मानि न स्यात्तामरुला
 किं वृक्राद्यनवः कुल्या ॥ १ ॥ अहं
 यनिमिहोद्योर्विहानसदसदलं
 लायदिवास्तु शायकमोरियुक्त
 दमयाविमंरुवयदास्तु हिवृकः
 श्रवाणि जयस्तु सा मया दथ कथ
 ललाष्टु रुदष्टु यक्तः ॥ स्तुभा दथ सा म न लयादुः ॥ २ ॥ रुदष्टु यून हि वाचा ॥ ३ ॥ दिष्टु

हिवाणा वृदयं प्रयत्न कृवगृह्युक्त निवीद्विकवः प्रयागिय इया वृधस्तु दानी निवर्तु नष्ट
 इकृन्ना रिक्तः ॥ ३ ॥ मनीव मा कृ
 ॥ यद्यादवास्तु किंवगृह्युक्त
 लाष्टि प्रयत्नोक्तु ग्रविष्टु ग्रयूनः
 यशशदिमसदमावाः ॥ ४ ॥ काशानि
 लांककृता मयीह वाचा मसुक्त
 नलं यनीयः ॥ २ ॥ नदीमेष्टु यमदिगिमिया न्नादवा दथमीवी नावादिग्या निवनददि

शंखलुनीयुक्तसु। शूलानिनिस्तुष्टमरुहिकानाश्रयथयानिभ्रमं प्रत्याहर्हिजेमनकसुभादाभ
 कालयदिस्यात्॥१०॥ यथाकनध्याय
 विद्यायदिकुशूलसमाह्वयामुद्रय
 विकेवमिकाष्टाष्टादिकिण्यैवे
 त्वाशादुःसर्वेदिग्दाविकाणि॥११॥
 देवमानि। याशस्त्रनिष्ठानाद्यवाणि
 कप्रवमिधितेनैगमनं कूवेनैमथादिन
 यिकमृदुयकिर्विलंघ्यायखामयिथाविद्योवृद्ध
 दिस्त्रदिकलनविष्टुहिसायाभ॥१२॥ जायायुवेष्टो
 मासाविष्टुष्टो। मृथाहृष्टमिष्टमयाश्विनैवे
 विशाविशाखानलयाश्वसथावायवापिशुख
 रानिस्मृमानिभक्षानिननिनिदिमानि॥१३॥ प्रष्टो
 कप्रवमिधितेनैगमनं कूवेनैमथादिन

उद्याखेनेवमवाशिसमथभर्षनिशाभ्रवनेःसर्वेक्षवकयेनदवक्षरुविकिःकालव्याशाभ्रः
 सा॥१४॥ किग्मासुसस्यकनथाव
 जायादिवानिगमसमथमनयाथा
 दिह्यदिननवावृष्टादिर्शनह्लाक
 शीनवृद्ध। शूलानीनिविलंघ्याया
 यमनियदिभगवत्पुष्टाश्रुति
 ववमिरुववकथमृदिग्दाविरुष्ट
 नृकलमाह्वयोनैयमसुमुरुथावृययल्लावा
 रुयाशुरुवेनिवद्ववाववववदावा॥१५॥ पुष्टा
 श्रुवारुर्गमदध्याश्रुदिननगकककुरीयाश्विष्टु
 किमनूजाथाविरुष्टोखायाश्रुष्टाशाःयूनरा
 ॥१६॥ उदयकिदिगियस्यायामियकुरुमाहावि
 विविधमिशिमिरुस्यथाश्रुमसुखलं मुनिशिवदय

वस्यश्चभययत्नाह॥१॥स्वल्पादिनाथेप्रतिफलियाभयियासर्गानूनमृयेकिसिद्धिकाम
 वरुदाप्रमिष्टुकमस्तुगमकुयाया नृकिगीमवद॥१६॥नीचलेशहमकप्रकिलाभः
 राजेवकलमिभस्तुगमवायुमि ॥१७॥नर्वविषेसास्तुकिमिद्व मानवप्रमिष्टवलायिद्विप्रमववगममिद्विष्टु
 ण॥१८॥नर्वविषेसास्तुकिमिद्व यायाद्वलायिद्विस्थादनृकलवलीयमीनृक
 कृमियभर्जकस्यानानाग्रहास्तु ॥१९॥विष्ठासमर्थाः॥२०॥दिशामवीशावविष्टु
 कृलोमकमायमहिन्दुजमृवय ॥२१॥जननसमयलशानेवनरुन्मरावाविष्टुविष्टुवनाद्यागक
 स्मिन्दलुककृकस्तु॥२२॥

रुलग्रयाभयमिद्विकृककदीयेलेग्रोःपार्थिवानागमनमथविष्टुवारुन्मिर्ककुल्याभव॥२३॥
 मस्तुकादयगृहवृवस्तुदिगुवि कष्ववकिशासकजियः॥मृलिवलिष्टुलिर्मगवा
 नृगगवकदयवमृवाणिम ॥२४॥



१॥ शाश्वतकानुगच्छावद्वक्तुं स यथावायुना द्यूर्ध्वमाना वाभाहं वाकुलसुदधानध
 ननयः पृच्छन्ति शाकदव्यैः वि
 दुर्गामी हाणी भवन्त्यवक्रम
 सुवमानसं विदुः शकुला चैव
 वकाननवा विनी ॥ ५ ॥ कामि
 दिनभक्तमना गसम्यविहाय मामिह काविनी ॥ १ ॥ नाहं स्वर्गं मया गता वि

सिद्धं न कावयत्तु धर्मसिद्धये संथाञ्च सिद्धं धर्मं न थेवव ॥ सिद्धं न कथं संथाञ्च कथं सि
 द्धमथापि वा । कथं गच्छ विनिदिष्टं
 गच्छ कथं मादिष्टां । आसन्नं कथं वि
 श्वं धर्मं कथं कथं कथं कथं कथं
 कात्यायनादि लक्ष्मण लक्ष्मणः
 मायवमद्य कनिष्ठानि श्रीगुली विविधीयते ॥ ७ ॥

मूलादिलाकषयथाकनीया। खवणनानाकेविथागदाही विवादमालासूवथाकनीया ॥ ग
 र्जनमोरारुडलसाठकि वेग्या दिलाकषयथाकनीया। धाकननानाकि वि
 थायदाका दिव्यामालासूवथा कनीया ॥ धरुकेविषजामीना सिद्धकिय
 भवव। कषके वेग्यामित्यर्ग ग रुगूदवेनिश्चिर्म ॥ धरुवेविषजामीना गान्नि
 भाकाथसायना। सिद्धकिये दानि कृमिकयार्थसायना ॥ कषणवेग्याजामी
 नाविनिकुयसुसमृद्धथ। गऊनवकुगूदाणा धनवाग्यसमृद्धथ ॥ धरुकयनकलुषी गऊ

^{शुद्ध बुधादि सामीय अकर्मनष्ट}
 दष्ट विषय समीहा कुशलकुष्ट ॥ २२ ॥ ^{समस्तलवयया कनी सदा येर दया करु कथ}
^{न निस्सारं प्रातिहोया कनिमिन्न} ^{अनवसि पापमन्त्र कव अग्रतः}
 रुवका नियमसूवणा ॥ यन ११ ^{नवकसिलकलामवर्न ॥ रुवकः ११ सुवभा १३}
^{भ वादिर्न हस्वामिन्} ^{दया कव आशाकवशृधुला प्राविष् कथा मद्य}
 मा १० विवुवर्न १२ ॥ २३ ॥ नाथ ५ ^{कृया २१ ३ था मविशाला ९ सत्वमूरयथासुद}
^{वाविप्रवारु कृमि जीव अथ उव विष्टरसर्व कष्टि निकट अहावर्ज अयणव}
 जलधारा ६ मूलजलनिभान्नक वदुदण ॥ सवकिणनिवन्नुव ॥ मनि १० म (शाय) ॥ २३ ॥

^{कष्टं} ^{उत्तममार्गे} ^{नव} ^{आश्रमि} ^{प्रत्यर्क} ^{अज्ञानविशेष} ^{कथ} ^{वाङ्} ^{रुवान्} ^{रुव}
 ३०२०१२ सुगतिं ६ रुवका १० यामि ६ समर्क २॥१॥ ॥ आरुद्वय विनाशान २२ २२ ॥ संसारम
^{धीर अर्थव सुवः} ^{आधेरीव उद्धारण} ^{कथः रुवान् वरु किलिष वन्दुसंशयक कष्टः}
 हारविभं ३०३१ यमिन रुवका
^{देशक नथागत धृष्ट हान रुवान्} ^{वरु सुवर् दीन आधिः निष्पुदिन इदोत्र}
 दशिक सुगमा नुरुव मत्व २ २ ॥
^{काम गारुः रुवान् करण संसार समुद्र हानः} ^{विश्व भाग विनाश ननुः रुवान् सुवानाय}
 मथ मार २ २ ॥ १२ ॥ सकलज्ञान निहन्त नदह ३ २ २ यमि २

^म ^{अमालन} ^{वादिनं मरु} ^{यमिवार} ^{उर्जक} ^{दरु} ^{हानय} ^{संकाय अनिश्चयवचनः}
 मा १ मरुका ६ १ श्रीमाल १० मनुदिन १३ मूयक याणि ११ नाशय १९ शां समा कुल वाणिः १२ ॥ १२ ॥
^{षष्ठयुयादिनरादि नस्तिनविलुन} ^{कारिर्कृति कलूष अदृष्ट शरीयण अनर्थं कार}
 मदिमथ न्दियव वैल मनसाल
^{अस्मरु कस्मिन् समर्क उदर दह} ^{आभण विकल्प कस्मार्क निश्चय}
 मया ९ स्मि ३ अकल २ ३ ० व नि
^{नित्यं म रुद्वनग नमिरुः विविरुकरयूर मरु रुह कनिमिरुन रुजितो नवक}
 सम्पुनि १६ मम ९ लाक १ १ प्रणमा १ विविधा ३ ३ लि ३ वरु १ भयः २ १ यना १३ रुका १ ॥ यायिक

^{यस्तत्ता रुद्र याद नयन उना नाना भाग आरु लीव इःखाः कस्तूरारुवनि सौभाग्य स्वस्व}
 १२॥ यः कवचवर्णविलासनहीना २ विविधशाधिमकरुयदीनाः ३॥ नृत्तयिदुष्ट १० पुष्ट
^{कहा कि उन्नि निशागा हान मरुतः विष वाद्यादि मृगादि मनुष्यदि}
 गयीवा ८ विलसन् १ वृक्षा मयुषा
^{दुष्टगर्म पापयन्त्रि निर्य वक्रायादि}
 शान्तिं ९ यान्ति ८ सदा १० यागिन् ८
^{धूमका यस्तत्तस्य रुवान् रुवृद्ध दूय नरु हजगदण कथं दयिकमाण अहासि हरुवन}
 भा ३ यस्या १ त्वं २ क्रिन १ दूतः १॥ १३॥ १४॥ नि १ लाकण १ कि २ प्रियमाण ३ मुख ३ सि ८ रुगवन् २

^{रुतः रुद्र वन् रुद्रायायकावचरुव दिवसी निश्चय भ गङ्गा अत्र रुद्रि}
 रुद्रा १८ रुगवन् १ यवकिरुदक १२ कर्प १३ माकुव १३ मा १८ मिद १९ व १२ ॥ १० ॥ दन्ति
^{अश्व सूरु साया धान निश्चल गृह नाना पलं हाऊ कं वक्र अनन्त}
 उवज्जम युरु कलरुं वाञ्छ २ म
^{तया याचकस्यः दयं अनर्क}
 नृ १ रुवमा १ धिस्था ८ दुरु ८ मन
^{साधनायधि वत्त कल पुविः साधन कुवच वधू यवकनूगमन भाषयसि यस्तत्तस्य रुवान् हजगस्तमिन्}
 दीयधि मणिमनु विपुद्धिः ११ सिधकि २ यक ३ यववर्ण ८ शुशसि २ यस्या १ त्वं ३ लाकण १॥

^{अनीन युवासाव नदथे शरु हरुगवन् हयि वञ्जामि कुरुमावह अवीदि निश्चय नयामि}
 गम मावृण्य ६५०० कि ११ गृण्य १० रुगवन् २ रुवकि १३ रुनामि १२ याव १८ मवर्क १० ने १९ व १८ विष्ण
^{कथं युनेः आया कारयसि अन्यपथाकन ह्यरुमि हरु वन् म नाहिकावितार्थे}
 मि १२॥ ६ ॥ किं वा २ धस्य ९ कथावि २ पयार्थ ३ मुखेसि ८ रुगव १ न्ना १ मकु माथ ० ८ ५ अ
^{वाविकल्पार्थे दृग्गयित्वा दया रुवर्क मवि नाशधर्मो जानयसि वीरु किमर्थे असाधं}
 थवा १३ य कु ११ कया ल रुव १० यु ण्य १९ जनयसि १३ दृष्टः ११ कथ १८ मवि यन् १२
^{साविकन निश्चय अस्मि सङ्कुष्ट नक्तदयसि यार्थ कथं नदथे दर्शः}
 ॥ २ ॥ स्मव ६५ ना ३ मि २ रुवसि २ यवि दुष्टः ३ कययसि १ कलुष्य २ कि १० मिनि ११ न ८ दृष्टः ६५

^{आनीना यम्भारु रुविकं अशीरी स्वकी य कामना निश्चय अग्रराषिर्न कस्मात् सांघर्ष}
 सु १०॥ २ ॥ सत्ता नां ३ य २ विनिर्ग २ मदिर्ग ३ स्वय ८ मनु भादि ८ मयि २ यव विदिर्ग ११ क ११ दिदा
^{म विलं इविर्ग नागय ह्यस्मिन् करिष्णामि सुप्रवचनं विविध नय}
 नी १९ मम १३ मान सयार्थ १२ सु ८ य १० नाथ १ कयामि १२ विलायः १८ ॥ ६ ॥ द ८ मनुष्ठा
^{देह्य ऊमाना यशु कुरुकि थकालयाना आगिनः यरुना डयकिर्ग कि निर्य यीतिर्ग यवसि}
 मव ऊमीना ३ मि शुभ्र क धन गकी ना २५ सत्ता ३ य २ निवसन्ति १ सदा १ लो ८ व क वि
^{सत्ता न नदथे क ऊम्भारु कथा लाया कनिमिर्गन म अथ जानय दयाराव दृष्ट कलवर्ग}
 माले निमि ११ रुव १२ मयि १३ वाहो १० ॥ १ ॥ नन २ मभा ३ यवि ३ सु ३ कावृण्य २ वीरु ८ शवीर १

^{वक्र} ^{रुद्रगवन्} ^{रुद्रोय} ^{भं} ^{कृकवह} ^{नवर्क} ^{नवि} ^{गामि} ^{असमा} ^{काविर्ग} ^{यवाङ्ग}
 उं१॥पालय२रुगव१नवत्ताकय१मां३याव१०दवीचिं६यामिन१विममां१॥३॥कृक३मन्त्र
^{लासविर्ग} ^{वारवाव} ^{नाग} ^{मुखेन} ^{सन्त्र} ^{वरुल} ^{रुद्रामित} ^{मह} ^{कर्म} ^{कलुष}
 श्री॥गुरु१२मऊ११२रु११मरुन
^{समस्त} ^{धंसय} ^{निर्ह} ^{मवीर} ^{दावन} ^{॥४॥यस्मात्} ^{आप} ^{संस्कार} ^{रुद्र} ^{ऊमर}
 (गर्भ)१३नाशय२संप्रति१२का
^{अधिर्य} ^{रुद्रिर्ग} ^{अनुर} ^{कस्मात्} ^{रुद्रवन्धन} ^{गान्ध} ^{सर्व} ^{वाक्} ^{दावन} ^{दीर्घकाल} ^{अस्मादि}
 कानि१३रुनि१२मसस्त्य३१॥६॥लाकीध्व१॥गमय१समस्त्य१२वाविकनवर्क२वि१॥मस्त्य

(The reverse side of the palm leaf manuscript is blank, showing only the texture and color of the aged leaf material.)

१३ नभाल श्री महादेव ॥ अंगुष्ठ ३ ॥ पुलक दुषणमा श्रयन्ती रुंगांगलाव मुकुलार ॥ १ ॥
 माली ॥ श्री गीता काखिल विहृति
 काया ॥ १ ॥ मूढो मूढ विदयकी
 गतानि ॥ माला दृष्टा मोक्ष कवी
 रुवाया ॥ २ ॥ श्री मीलिका म
 मनी गनी ॥ श्री कक वसिरु कनी नि कय म न र्नी नृत्त रुवत्त म रुङ्गी गाय गी वाया ॥ ३ ॥
 अ ३

वाक नृप मधुक्ति नः शिर को मुखया लावा वली वरु वि नील मयी विरुक्ति ॥ का मयदा रुग
 वभायिकटा का माला कल्याण
 लसि भाव सके टराय छोवा व
 गता मह नीय म कि रुदाणि
 धम नः खल यत्य रुग्नी ग
 दिरु मंगल मी कृणार्थ मा डाल सादि म क वा क व क न्य काया ॥ ६ ॥ विष्वा मधु श्रुव क वि
 वा २

रुमदानदक मानंदरुहवधिकं मवूविद्विषायि ॥ १ ॥ वनिषीदशु मयिकुणमीकणाद मिन्दी
 वथादवसहादवमिन्दिवाया ॥ १ ॥ ॥ ॐ ह्राविशिष्टममथापिययानवादाक ॥ ६ ॥
 विपिष्टययदनुयदरुङ्गी ॥ ६ ॥ द
 पूममयुक्तवविष्टराया ॥ ७ ॥ द
 नविदंगशिष्टोनिमल्लु ॥ ८ ॥ सुस्वामो
 णीनयनामृवाहा ॥ ९ ॥ गीर्धवभक्तिगवूठवृत्तसुन्दरीमि ॥ १० ॥ कसुमीमिशिशिष्टारवववल्गु

निमृष्टिस्त्रिभुजलयसिद्धिषुसंस्त्रिमाथे ॥ १० ॥ नम
 नालीकनिराननाथे नमामुद्र
 ये नमामुद्रावायवल्गुमाथे ॥
 स्वयसन्निराथे नमामुद्राकाश
 नमामुद्रापूर्वकवाकिमाथे नमा
 माथे नमामुद्रावकवदिमाथे ॥ १३ ॥ सुवन्निथमुक्तिरिवमूरिववदं कयीमयीकिरुव

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥ सर्व
 मिक निलय मथा कुरु भू यवल
 मनाहू विरुवन कृमिक विषसी
 टीय दाय दाय ता की गरी वाव
 ल झी दिवो मो ऊ न्ये मो वि ग ए ख
 स रु म म गृ ह स वे म गि ल्या यु क्ता ॥ १५ ॥ ल झी की व स मु द वा क न य धी र ग या भां शुभी

दासी कृम स म मृ द व व नि मां रे ला क दी य कि वां श्री म न न्य क टा क ल व वि रु व व क
 गा व र त्वि रे ला वा क दू मि नी
 य द नि य द रु क्त य दाल थ य
 त्व र्णा द य द म पि स नि व रु थ
 ऊ न व न रु स्य । क टा क पा र न
 मा कः श्री ह विल झी क ण म पि म रु ता रु व थ रु व शु थ । वि द्या दी ना पि दी ना रु म ए रु व

१ तद्धैनीमूलभरवन् शोच विरुह विद्यति । मदायवासीरुवति सनवः युद्धलातस ॥
मथा कुलितलभरवा धर्मिष्ठा सत्यवा दिन । पद्मावतलये श्वरा डः खदा विद्यमानक ॥
मृनामिका मूलभरवा विद्यादीना यनश्वरः सयूयदावसयनः कुलवद्विह
विद्यति ॥ कनिष्ठा मूलभरवन् श्वि थावायूयस्यवा । तस्य डद्धैनीमूलभरवा
श्रीनिमिरुधेन कथं । दातायवाग्निन मूयः नित्यं श्रीवल्लरीरुवत् । कनिष्ठाय उदी
द्यायां शोवत्तुस्यवरुगिन ॥

SEALING
547
Rajab 1216

Handwritten notes in Arabic script, including the word "Rajab" and the year "1216".

6x5

12 11 11

